सं.ग्रो.वि./फरीदाबाद/47-85/23477.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै. दी मैंनेजर अलकन इंन्डिया प्लाट नं ०.41, के सैक्टर-6 फ़रीदाबाद के श्रमिक श्री ग्रति नारायण झा तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

धीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-85-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री ग्रति नारायण झा की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.श्रो.वि./श्रम्बाला/35-85/23484.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) परिवहन आयुक्त हरियाणा चन्डीगढ़ (2) जनरल मैनेजर हरियाणा रोड़बेज, कैथल के श्रमिक श्री जगदीश कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है:—

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल, विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए अब भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय अम्झाला को विवाद अस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद अस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है।

क्या श्री जगदीण कुमार की सेवाओं का समाधान न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो ब्रह किस राहत का हकदार है ?

संग्रो.वि /ग्रम्बाला / 58-85 / 23491. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. मती फार्मिकल कुलदीप नगर ग्रम्बाला छावनी के श्रमिक श्रीराम चन्द्र तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है:—

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए अब आद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय अम्बाला को विवाद ग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय- निर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है।

क्या श्री राम चन्द्र की सेवायों का समाधान न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस सहत का हकदार है।

सं.श्रो.वि./गुड्गांवा/6-85/23497.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि 1. परिवहन श्रायुक्त हरियाणा, चण्डीगढ़ 2. जनरल मैनेजर हरियाणा रोड़वेज रिवाड़ी, जिला महेन्द्रगढ़ के श्रीमक धर्मबीर तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये यब ग्रौद्योगिक विवाद श्रिष्ठित्यम, 1947की धारा 10की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुथे हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रिष्ठसूचना सं 3864-ए-एस-ग्रो.(ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिष्ठितियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या द्विज्ञस्त नामला न्यायितण्य हेतु निविष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है;

क्या श्री धर्मबीर की सेवाग्रों का समापन वायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?